मयूरभंज-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ के 'एडिक्शन फ्री ओडिशा' डी-एडीक्शन कैम्पेन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू। साथ हैं राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल, राजयोगिनी ब्र.कु. कमलेश दीदी, ब्र.कु. सुप्रिया बहन, ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह तथा ब्र.कु. नथमल भाई।

एंटीगुआ-बरबुडा। एंटीगुआ और बरबुडा के प्रधानमंत्री गैस्टन अलफान्सो ब्राउन से उनके ऑफिस में मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् उनके साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई,माउण्ट आबू, एंटीगुआ और बरबुडा में ब्रह्माकुमारीज़ की नेशनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. पायल बहन तथा अन्य।

भगवान तो वायदा निभाता ही है... परंतु हम...

जिसने भी बाबा को कहा, बाबा, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा और सचमुच उसको निभाने की कोशिश करता है तो उसको बाबा ने भी कभी नहीं छोड़ा, उसको पूरा साथ दिया और साथ देता भी है। ऐसे बहुत-से मिसाल हमने देखे हैं। जब हम बच्चे भगवान का हाथ और साथ नहीं छोड़ते तो वह सर्वशक्ति मान परमपिता अपने बच्चों का साथ और हाथ कैसे छोड़ेगा?

ब्रह्माकुमार-कुमारियों का आवाज़ है, बाबा, हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। इसके उत्तर में बाबा ने क्या कहा होगा? जब आत्मा अपने पिता परमात्मा से कहती है कि बाबा हम आपका हाथ नहीं छोड़ूँगी, तो परमात्मा ने क्या कहा होगा? उसने भी कुछ कहा होगा ना! कुछ कारण बन जाता है तो मनुष्य हाथ और साथ दोनों छोड़ देते हैं। लेकिन बाबा, जो परमपिता परमात्मा है वो हमारी यह आवाज़ सुन रहा है। तो वो क्या कहते होंगे? उनका मुखारविंद कैसा दिखाई पड़ता होगा! वे भी कहते होंगे, हाँ बच्चे, मेरे मीठे बच्चे, मेरे सिकीलधे बच्चे, मैं भी आपका हाथ नहीं छोड़ूंगा। जब हम उसका साथ नहीं छोड़ेंगे तो वो कैसे हमारा साथ छोड़ सकता है? भक्तिमार्ग में हम उसको अर्जी डालते रहे, चिट्ठी लिखते रहे लेकिन उत्तर नहीं आता था। प्रार्थना करते रहे परन्तु कोई जवाब नहीं मिलता था। भगवान से प्रार्थना करना ही उसको अर्जी लिखना है। क्यों? क्योंकि उसका परिचय ही हमें नहीं था।

लेकिन अब संगमयुग में बाबा का तुरन्त उत्तर मिलता है। उसको सुनने की शक्ति चाहिए। आप उसकी तरफ ध्यान दो तो उसकी आवाज़ भी सुनायी पड़ती है कि मीठे बच्चे, मैं भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा। लेकिन उसकी आवाज़ सुनने की योग्यता चाहिए। बाबा तत्काल जवाब देते हैं कि बेटे, लाडले बच्चे, सिकीलधे बच्चे, मेरे विशेष बच्चे, सेवाधारी बच्चे, मैं भी आपका साथ नहीं छोड़ूंगा। आता है सुनने में? इसीलिए कहते हैं भीतर के पट्ट खोल। भीतर की आँख को तीसरा नेत्र कहते हैं। उस नेत्र को खोलना ही चाहिए। शिव बाबा का धाम, नाम, रूप क्या है- यह देख नहीं सकते। तीसरे नेत्र के साथ तीसरा कान भी खुलना चाहिए। लोग तीसरे नेत्र के बारे में कहते हैं लेकिन तीसरे कान के बारे में नहीं जानते। उस तीसरे कान से, भगवान क्या कह रहा है वो सुनाई पड़ता है। हमने तो रिसीवर ही बन्द कस्के रखा है। वह बच्चों को फोन पर कुछ बताना चाहता है, कुछ बात करना चाहता है कि मेरे बच्चे कठिनाई में हैं उनको उससे मुक्त होने की युक्ति बताऊँ। लेकिन बच्चों ने टेलिफोन के रिसीवर का स्विच ही बन्द करके रखा है। तो क्या करे? हम बच्चे कहते हैं, बाबा हमें मदद करो, हम मुश्किल में हैं। वह हमारी प्रार्थना सुन रहा है, वह जवाब देना भी चाहता है कि बच्चे क्या करें। लेकिन हमने अपने मन को व बुद्धि को उसकी तरफ नहीं रखा है। कहीं

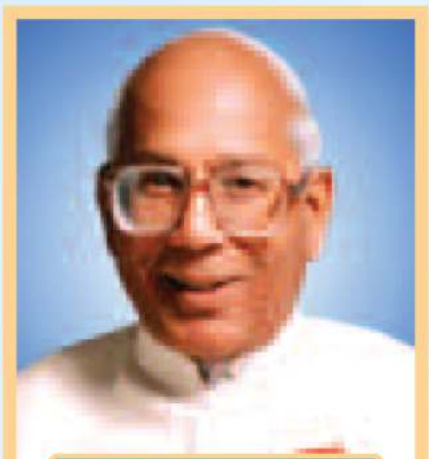

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

और व्यस्त हैं हम। अपने टेलिफोन को दूसरों को फोन करने में बिजी रखा है। लाइन फ्री नहीं रखी है तो जवाब कैसे मिलेगा? जब हम भी कहते हैं, बाबा, हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे और बाबा भी कहते हैं, बच्चे, मैं भी आपका साथ नहीं छोड़ूँगा तो इसका परिणाम क्या होगा? आप जानते हैं? जब भगवान किसी का साथ दे और वह भी भगवान का साथ न छोड़े तो उसका परिणाम क्या होगा? उस व्यक्ति की आश अथवा मनोकामना पूरी होगी।

साथ और हाथ न छोड़ने का और जोड़ने का अर्थ क्या है? साथ छोड़ा कैसे जाता है और जोड़ा कैसे जाता है? यह सब सूक्ष्म बातें हैं। यह स्थूल की बात नहीं। कहते हैं दो रामायण हैं। एक है रामायण और दूसरा है अध्यात्म रामायण। राम था, उसकी सीता थी, एक दिन रावण आया, सीता को उठाकर ले गया। राम-रावण की लड़ाई हुई आदि-यह है रामायण। संगमयुग में बाबा आकर बच्चों को बताता है कि राम कौन है, रावण कौन है, सीता कौन है, उनका आध्यात्मिक अर्थ क्या है- यह है अध्यात्म रामायण। इसी प्रकार, बाबा आकर हमें यह बताते हैं कि साथ छोड़ने का और साथ जोड़ने का आध्यात्मिक अर्थ क्या है। साथ चलना माना साथ-साथ चलना। एक के बगल में चलना। एक-दूसरे के पीछे भी नहीं चलना, साथ-साथ चलना। एक-दूसरे का मददगार होकर चलना। बाबा का साथ होगा तो हमारे ऊपर माया का वार नहीं होगा। अगर किसी के ऊपर वार हो भी जायेगा तो बाबा हमारे साथ है, वह बचायेगा, मदद करेगा। अगर कोई आत्मा किसी धोखे से माया के वश हो भी जाये तो बाबा का भी फर्ज़ बनता है कि अपने बच्चे की रक्षा करे, मदद करे। करता है, ज़रूर करता है और की है। माया के वश हुए उस बच्चे को बाबा ने पत्र लिखा, फोन किया, किसी-न-किसी बच्चे को उसके पास भेजकर अपने पास बुलाया, दुबारा ऊपर उठने के लिए उमंग-उत्साह भरा। बाबा ने उनको छोड़ा नहीं है। जिसने भी बाबा को कहा, बाबा, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा और सचमुच उसको निभाने की कोशिश करता है तो उसको बाबा ने भी कभी नहीं छोड़ा, उसको पूरा साथ दिया और साथ देता भी है। ऐसे बहुत-से मिसाल हमने देखे हैं। जब हम बच्चे भगवान का हाथ और साथ नहीं छोड़ते तो वह सर्वशक्तिमान परमपिता अपने बच्चों का साथ और हाथ कैसे छोड़ेगा? यह हमारा, भगवान के साथ का एग्रीमेन्ट(समझौता) है। यह सामान्य एग्रीमेन्ट नहीं है जो पेपर पर लिखा रहता है। वह तो कभी गुम भी हो जाता है। यह तो आत्मा और सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ का एग्रीमेन्ट है। यह अविनाशी आत्मा का अविनाशी परमात्मा के साथ का एग्रीमेन्ट है। इसको पूरा किया जायेगा और अन्त तक रहेगा अगर आपने दिल से कहा है तो।

नेपाल-कलैया। सिम्रौनगढ़ नगरपालिका के मेयर किशोरी प्रसाद को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना दीदी।

दिल्ली-चांदनी चौक। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित नशा मुक्ति अभियान के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. बिमला दीदी, ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता, ब्र.कु. संगीता दीदी तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के पंच मंदिर हेनरी बाज़ार सेवाकेन्द्र द्वारा नगर के चंचल बाबा रोड स्थित लक्ष्मण चौक पर आयोजित 'विश्व परिवर्तन आध्यात्मिक प्रदर्शनी' के उद्घाटन पश्चात् नगर निगम के उप मेयर डॉ. लाल बाबू प्रसाद गुप्ता को सम्मानित कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विभा बहन। साथ हैं ब्र.कु. नीतू बहन, मीडिया विंग के ब्र.कु. अशोक वर्मा तथा डॉ. आर.एन. सिंह।

फतेहपुर-पूर्वी तांबेश्वर(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर जिला अस्पताल में नर्सेस का सम्मान करने के पश्चात् मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. प्रदीप सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता बहन एवं ब्र.कु. दिव्या बहन।